प्रारंभिक राष्ट्रवादी आंदोलन (1885–1905 ई.)

महाविद्यालय: स्वामी विवेकानंद गर्ल्स कॉलेज, रूपनगर

विषय: इतिहास | **कक्षा:** बी.ए. 5वीं सेमेस्टर

व्याख्याता: श्री अमित कुमार

Made with GAMMA

प्रारंभिक राष्ट्रवादी आंदोलन: एक परिचय

1885 से 1905 तक का दशक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कालखंड था। इस समय भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ और एक संगठित राजनीतिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ।

साम्राज्यवाद के विरुद्ध

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित आंदोलन की शुरुआत

राष्ट्रीय चेतना

भारतीयों में राष्ट्रीय भावना और स्वाभिमान का विकास

लोकतांत्रिक आंदोलन

शांतिपूर्वक प्रार्थना, निवेदन और विरोध की नीति

Made with GAMMA

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि

01

उपनिवेशवाद का प्रसार

ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारत के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित किया

02

आर्थिक शोषण

भारत से संसाधनों का निरंतर दोहन, ऊंचे कर और व्यापारिक विनियमों से देश की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हुई

03

शिक्षा का प्रसार

अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय युवाओं को राष्ट्रवादी विचारों से परिचित कराया

04

सामाजिक सुधार आंदोलन

राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद जैसे नेताओं ने सामाजिक जागृति पैदा की

Made with GAMMA

Indian National Congress की स्थापना (1885)

स्थापना का समय और स्थान

28 दिसंबर, 1885 को बॉम्बे में 72 प्रतिनिधियों की पहली बैठक हुई

संस्थापक

ए. ओ. ह्यूम (एक ब्रिटिश सिविल सेवक) ने संगठन की नींव रखी

प्रारंभिक उद्देश्य

- भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का विकास
- ब्रिटिश सरकार के साथ संवाद स्थापित करना
- सामाजिक-आर्थिक सुधारों की मांग

Made with GAMMA

प्रारंभिक राष्ट्रवादियों की विचारधारा और विशेषताएँ

शांतिपूर्वक प्रतिरोध

हिंसा का विरोध, प्रार्थना और निवेदन की नीति अपनाई

विश्वास में विश्वास

ब्रिटिश सरकार पर भरोसा कि वे न्यायप्रिय हैं

सीमित आधार

केवल शिक्षित मध्यम वर्ग तक सीमित, जनसाधारण से दूर

प्रतिनिधित्व की मांग

विधानमंडल में भारतीयों की उचित प्रतिनिधित्व चाहा

धीरे-धीरे परिवर्तन

सुधारवादी दृष्टिकोण, तुरंत स्वतंत्रता नहीं मांगी

वैधानिक ज्ञान

ब्रिटिश कानूनों और संविधान का गहन अध्ययन किया

Made with GAMMA

प्रमुख प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेता

दादाभाई नौरोजी

"भारत का उपखंड" का सिद्धांत प्रस्तुत किया। भारत से संपत्ति के निरंतर निष्कर्षण को साबित किया।

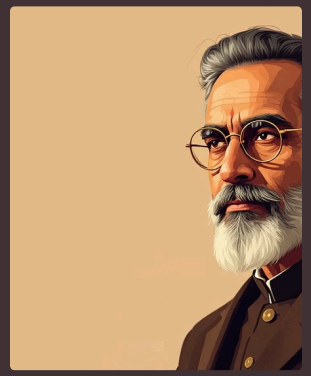

सुरेंद्रनाथ बनर्जी

कलकत्ता के छात्रों में राष्ट्रवादी भावना जगाई। संगठनात्मक क्षमता के लिए जाने जाते थे।

गोपाल कृष्ण गोखले

गांधी जी के राजनीतिक गुरु। धीरे-धीरे सुधारों पर जोर दिया।

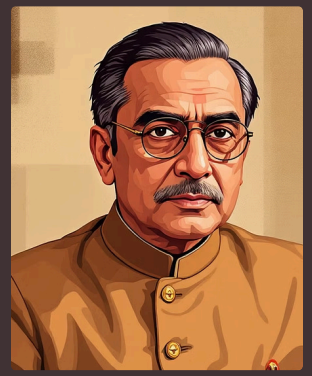

फिरोजशाह मेहता

बॉम्बे के प्रमुख नेता। स्थानीय स्वशासन और शहरी सुधारों पर काम किया।

Made with GAMMA

प्रारंभिक राष्ट्रवादियों की मांगें और कार्यक्रम

प्रतिनिधात्मक सरकार

विधान परिषदों में निर्वाचित सदस्यों की संख्या बढ़ाना और भारतीयों का उचित प्रतिनिधित्व

सिविल सेवा सुधार

भारतीय सिविल सेवा परीक्षा की उम्र सीमा बढ़ाना और भारत में परीक्षा आयोजित करना

आर्थिक सुधार

भारी करों में कमी, रेलवे किराए में भारतीयों के लिए छूट, घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन

सैन्य खर्च में कटौती

बाहरी आक्रमणों के लिए सैन्य खर्च कम करना और भारतीय खजाने पर बोझ कम करना

शिक्षा और स्वास्थ्य

सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक व्यय करना

Made with GAMMA

कार्य-प्रणाली: प्रार्थना, निवेदन और विरोध

प्रार्थना

शांतिपूर्वक अपनी बात रखना

निवेदन

विस्तृत मेमोरेंडम तैयार करना

प्रचार

जनमत जागृत करना

वार्ता

ब्रिटिश अधिकारियों से संवाद

प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने विधिवत तरीकों से काम किया। उन्होंने राजनीतिक अपराध, सार्वजनिक सभाओं, रैलियों और पत्रिकाओं के माध्यम से जनता तक अपनी बात पहुंचाई।

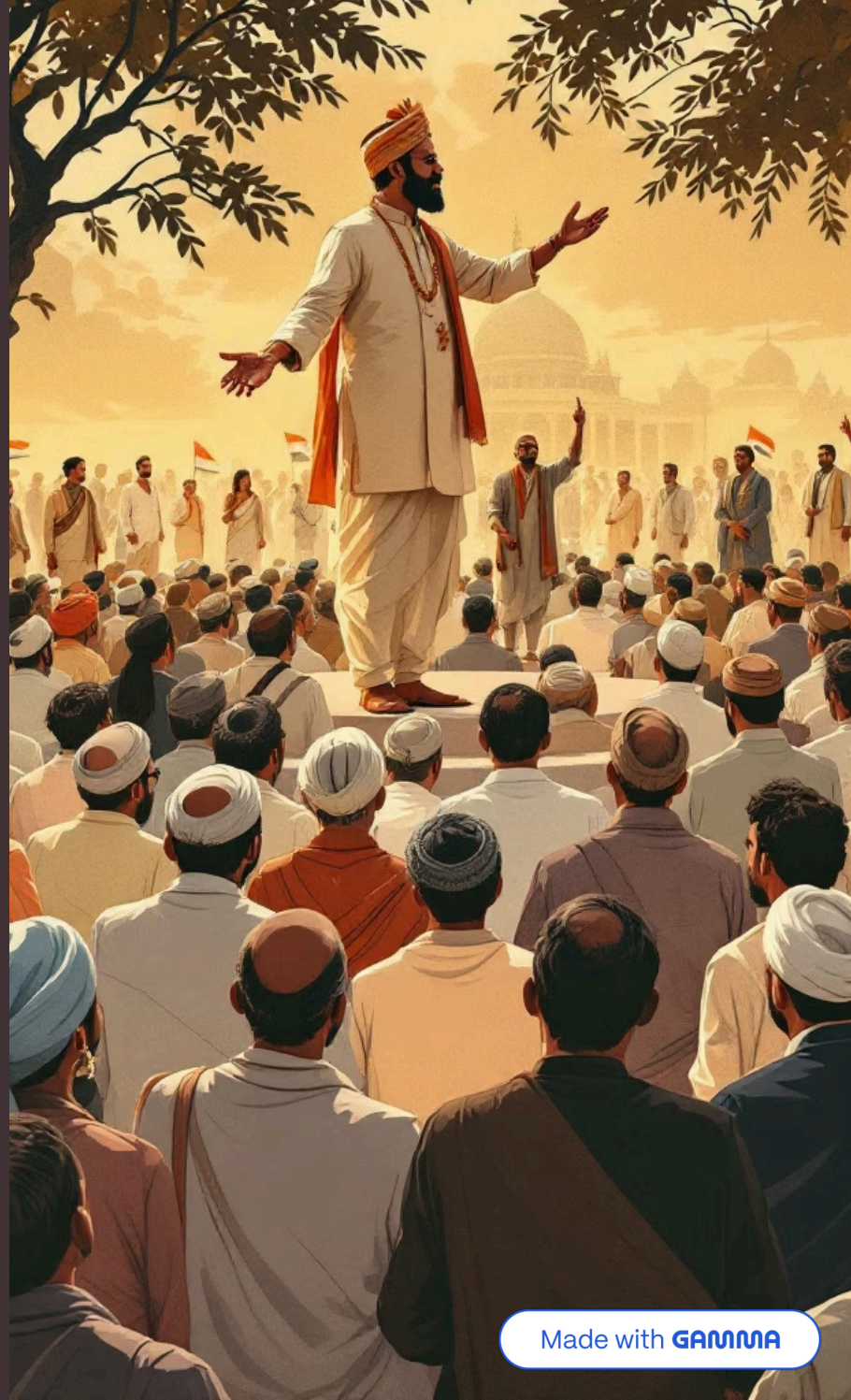

Made with GAMMA

उपलब्धियाँ और सीमाएँ

√ उपलब्धियाँ

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव रखी
- भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाई
- ब्रिटिश शासन की नीतियों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया
- प्रतिनिधात्मक संस्थाओं में भारतीयों का प्रतिनिधित्व संभव हुआ
- स्थानीय स्वशासन संस्थाओं की स्थापना हुई

⚠️ सीमाएँ

- जनसाधारण तक पहुंच सीमित रही
- केवल शिक्षित मध्यम वर्ग तक सीमित
- हिंसा का विरोध करने से प्रगति धीमी रही
- ब्रिटिश सरकार के प्रति अत्यधिक विश्वास
- सामाजिक सुधारों पर पर्याप्त ध्यान नहीं

Made with GAMMA

ऐतिहासिक महत्व और निष्कर्ष

नींव का निर्माण

प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा तय की और भविष्य के संग्राम की नींव रखी

राष्ट्रीय एकता

धर्म, जाति और क्षेत्र के आधार पर भारतीयों को एक सूत्र में बांधा

प्रेरणा का स्रोत

बाद के क्रांतिकारी और सत्याग्रही आंदोलनों के लिए प्रेरणा प्रदान की

> प्रारंभिक राष्ट्रवादी आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय चेतना का जन्म किया और भारत को स्वतंत्रता की ओर प्रेरित किया। यद्यपि उनकी विधियाँ सीमित थीं, परंतु उनका योगदान अमूल्य है।

Made with GAMMA